AD EDUXIAN JOURNAL,
VOL-1, ISSUE-1, JULY 2024

नारी जाति का संघर्ष : प्राचीन से अर्वाचीन तक

मन्जू रानी,
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान

&

Research Guide
Dr. Dhiraj Bakolia
Department of Political Science
Govt. Lohia College, Churu (Raj.)

शोध सार

भारत मैं नारी जाति का संघर्ष प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक निरंतर जारी रहा है। प्राचीन काल में नारी की स्थिति पुरुष के समान थी । मध्यकाल में नारी की जीवन निम्नस्तरीय हो गया और उसकी समानता और स्वतन्त्रता पर अंकुश लगने प्रारम्भ हो गयें ब्रिटिश काल में समाज सुधारको द्वारा उनकी स्थिती को सुधारने के प्रयास किये गयें जिससे नारी जाती की दशा में सुधार हुए आधुनिक समय में नारी सशक्त होकर पुरुषों के समान प्राय प्रत्यके क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है। बडे बडे पदो पर व विभिन्न क्षेत्रो मे कार्य करके समाज को प्रगती की तरफ ले जारही है।

शब्दावली : संघर्ष, प्राचीन, समानता, स्वतन्त्रता, अंकुश, सशक्त

भारतीय समाज में नारी की स्थिति विभिन्न कालों व समाज में भिन्न–भिन्न रही है । मनु ने मनुस्मृति में नारी का वर्णन करते हुए कहा है की "यत्र नारियस्तु पूज्यन्तें, रमते तत्र देवता" । अर्थात जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं यह कहकर नारी को सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा दिया । वहीं दूसरी तरफ मनु ने उन्हें दोयम दर्जे का मान कर उन्हें अधिकार विहीन कर असहाय बना दिया और कहा कि नारी को दिन–रात अस्वतंत्र रखे, हमेशा उन्हें किसी ने किसी पुरुष के पराधीन रखा जाना चाहिए। बचपन में पिता, युवावस्था में पति, वृद्धावस्था में बेटे उसकी रक्षा करते हैं नारी को कभी भी स्वतंत्र नहीं रखा जाना चाहिए ।

विश्व के निर्माण के बाद ईश्वर ने इसे और अधिक सुंदर बनाने के लिए मानव की रचना की। ईश्वर ने मानव के दो रूप बनाए एक पुरुष व दूसरा नारी । नर और नारी दोनों एक दूसरे के पूरक हैं परंतु नारी के बिना विश्व का कोई अस्तित्व ही नहीं है। अपनी शारीरिक रचना से नारी दुनिया के भविष्य की निर्मात्री बन गई । प्रत्येक महान व्यक्तित्व के पीछे नारी है। समय चाहे कोई भी रहा है विश्व का विकास नारी के विकास पर ही आधारित है।

वैदिक काल

भारतीय समाज के उदय का काल वैदिक काल है इस काल में भारतीय धार्मिक और सामाजिक जीवन का आधार रचा गया था । वैदिक काल के समाज में नारी को विशेष स्थान प्राप्त था उन्हें पुरुष के समान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार था। वैदिक युगीन समाज में नारी के ऊपर घर के कार्यों और धार्मिक कर्तव्यों के पालन का दायित्व था वह सुख और समृद्धि की संजीवनी मानी जाती थी। सामाजिक प्रशासनिक व राजनीतिक कार्यों में भाग लेकर समाज के विकास में अपना योगदान देती थी । वैदिक कालीन समाज में लडको की तरह लडकियों का भी प्यार दुलार और आदर सम्मान दिया जाता था। वैदिक काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना लड़कियों के लिए भी आवश्यक था। उनका भी उपनयन संस्कार होता था । उपनयन संस्कार के बाद लड़कों के समान लड़कियों को भी शिष्टाचार का पालन करना पड़ता था । उपनयन संस्कार के बाद 16 वर्ष तक वह अविवाहित रहकर शिक्षा ग्रहण कर सकती थी। छात्रायें दो भागों में विभाजित थी एक ब्रह्मवादिनी और दूसरी सद्योद्वाहा । ब्रह्मवादिनी छात्राएं आजीवन नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र और धर्म का अध्ययन करती और सद्योद्वाहा छात्रायें विवाह के पूर्व तक (15 –16) वर्ष तक अध्ययन करती थी । अध्ययन के दौरान वह वैदिक ऋचाओं को वह कण्ठस्थ करती थी। महिलाएं ऋचाओं की रचनाकार और कवयित्री भी थी । लोपामुद्रा, निवा –वारी, सिकिता, विसवावरा आदि लगभग 20 महिलाओं ने ऋग्वेद के लेखन में अपना योगदान किया था। ऋग्वेद के भाग 10 के 145 और 159 ऋचाओं की रचनाकार महिलाएं ही है। गार्गी, सुलभा, मैत्री आदि भी ऋचाओं की रचनाकार थी इन्होंने विद्वता के क्षेत्र में अपना अपूर्व योगदान दिया ।

वैदिक काल में स्वयंवर विवाह का प्रचलन था । जिस प्रकार वर को यह अधिकार प्राप्त था कि वह योग्य कन्या से विवाह करें उसी प्रकार वेदों में कन्या को भी अधिकार दिया गया कि वह योग्य और अपनी पसंद के अनुसार वर का चयन करके उससे विवाह करें । रामायण काल में सीता का स्वयंवर व महाभारत काल में द्रोपदी का स्वयंवर इसके श्रेष्ठ उदाहरण है । इस काल में विधवा विवाह की प्रथा भी थी । ऋग्वेद में कहा गया है कि पति की मृत्यु के पश्चात वह उससे विवाह कर सकती है जो उससे विवाह करना चाहता है। बाल विवाह व पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन नहीं था । हिंदू दर्शन के अनुसार चार युग हुए सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, और कलयुगं सतयुग अर्थात रामायण कालीन समय में नारी को नैतिकता का आदर्श बना दिया जिससे वह पुरुष की दासी बन गई और उसका कर्तव्य पति की सेवा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना हो गया । द्वापर युग में नारी को पुरुष के समान माना गया । श्री कृष्ण ने नारी को मुक्ति दिलाने में पहला कदम उठाया श्री कृष्ण ने राधा, गोपियों के साथ मित्रता के संबंध स्थापित किए ।

उत्तर वैदिक काल में नारी की स्थिति व सम्मान में गिरावट आई जिससे उनकी स्थिति दयनीय हो गई । समाज में असमानताएं होने लगी धार्मिक कर्मकांडो में नारी की स्थिति को और भी बदतर कर उन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया । माता–पिता के लिए कन्या का विवाह आवश्यक और धार्मिक कार्य माना जाने लगा । शिक्षा पर प्रतिबंध, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बहु विवाह जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन उत्तर वैदिक काल से ही प्रारंभ हो गया।

बोद्ध काल

बोद्ध काल के प्रारंभ में नारी की स्थिति दयनीय थी । मदिरालय मार्ग, नदी आदि जैसे सबके उपभोग के लिए थे उसी प्रकार नारी को भी सबके उपभोग की वस्तु ही माना जाता था । कालांतर में बौद्ध काल में नारी की स्थिति में सुधार हुए। वह शिक्षा ग्रहण करने जाने लगी। अनेकों बौद्ध महिलाओं ने तो अविवाहित रहकर शिक्षा का प्रचार प्रसार करना प्रारंभ किया। बहुत सी महिलाओं ने धर्म व दर्शन की शिक्षा का प्रसार करने में प्रसिद्धि भी प्राप्त थी स्वयं सम्राट अशोक की पुत्री संघमित्रा धर्म का प्रचार करने श्रीलंका तक गई और वहां धर्म की शिक्षिका के रूप में प्रसिद्ध हुई। त्रिगाथा के अनुसार 32 अविवाहित और 10 विवाहित महिलाओं ने बौद्ध दर्शन के तहत मुक्ति प्राप्त करने के लिए ज्ञान प्राप्त किया ।

जैन धर्म

इस काल में भी नारियों ने शिक्षा प्राप्त की । शिक्षित महिलाओं में कुछ ने शिक्षा के प्रति असीम श्रद्धा तो कुछ ने आजीविका के रूप में शिक्षा को अपनाया और अपनी जीविका का साधन बना लिया। किसी अन्य धर्म में नारी को उतना सम्मान नहीं दिया गया जितना जैन धर्म ने दिया है। जैन धर्म में नारी को नारायण की जननी मानकर उसे समाज में उच्च स्थान प्रदान किया है। नारी को पुरुष की प्रेरणा और आदर्श माना। पति और पत्नी दोनों सृष्टि की रचना है और दोनों मिलकर सृष्टि का संचालन करते हैं। पुरुष स्त्री का काम नहीं कर सकता और ना ही स्त्री पुरुष का अतः दोनों में प्रतियोगिता नहीं होना चाहिए । पुरुष को स्त्री के सहयोग से समाज का विकास करना चाहिए ।

भगवान ऋषभदेव ने स्वयं पहले ब्राह्मी और सुंदरी की को अक्षर और अंक विद्या प्रदान की और इनके बाद भारत और बाहुबली को इससे भी ज्ञात होता है कि समाज में नारी का स्थान ऊंचा था । परंतु जैन धर्म में नारी की मुक्ति का मार्ग निषेध है क्योंकि नारी निर्गण्य दिगंबर नहीं है हो सकती और मोक्ष केवल निर्गण्य दिगंबर को ही प्राप्त हो सकता है ।

मध्यकाल

हिंदू और मुसलमान इन दो वर्गों में भारतीय समाज बंटा हुआ था । बहुसंख्यक हिंदू वर्ग था फिर भी राज्य के उच्च पद मुसलमानों को प्रदान किए जाते थे। हिंदुओं को उच्च सेवाओं से दूर रखा जाता था। इस काल में हिंदू धर्म में प्रथाओं का बहुत महत्व था जिससे भारतीय नारी की स्थिति में धर्म का व्यापक प्रभाव था। हिंदू धर्म में शुद्धता की प्राथमिकता थी जिससे महिलाओं पर कठोर नैतिक नियमों का पालन करने का दबाव रहता था। नारी को पवित्र और सदाचारी के रूप में देखकर उनका सम्मान किया जाता था। सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, देवदासी प्रथा, बहुपत्नी प्रथा समाज में प्रचलित थी। जिससे स्त्री पुरुष की अपेक्षा कमजोर व दयनीय हो गई मुसलमान वर्ग ने भी फारसी परंपराओं को अपनाकर नारी की स्थिति को निम्न श्रेणी का बना दिया था।

सल्तनत काल

प्राचीन काल में स्त्री को पुरुष के समान समानता प्राप्त थी वह विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण कार्य करती थी। जिससे उन्हें सम्मान व आदर प्राप्त था। पूर्व मध्यकालीन भारत में भी स्त्रियों राज कार्यों में हिस्सा लेती थी। राजपूत वंश में कन्याओं को शिक्षा प्राप्त करती वह हथियारों का परीक्षण भी लेती थी। राज दरबार में भाग लेती, राज महलों में वह दासी, रक्षक व प्रतिहारों के रूप में कार्य करती थी।

युद्धों में भाग लेती तथा शिकार पर भी जाती थी। विभिन्न त्यौहारो व उत्सवों मे भाग लेती नाच गाना भी करती थी। दिल्ली सल्तनत के राजनीतिक इतिहास में रजिया सुल्तान का सिंहासन रोहण अपने आप में विशेष महत्व रखता है। अपनी योग्यता के आधार पर राजगद्दी पर बैठने का अधिकार पहली बार रजिया सुल्तान को प्राप्त हुआ।

मुगल काल

भारत में मुगल वंश की नींव 1526 ई में बाबर ने रखी थी । इस काल में भी स्त्रियों ने विभिन्न क्षेत्रों में अनेको कार्यों को करके राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में अपना योगदान दिया। बाबर के समय स्त्रियों को राजनीति में भाग लेने का अधिकार था परंतु उन्हें राजसता का अधिकार नहीं था। स्त्रियां युद्धों में भी साथ जाती थी। राजनीतिक विषयों में रुचि रखती थी तथा आवश्यकता अनुसार सलाम मशवरा भी देती थी। बाबर की माता युद्धों में बाबर के साथ जाती थी। बाबर की पत्नी महिम बेगम सम्राट के साथ दिल्ली की गददी पर बैठी थी तथा बाबर की सहायता करती थी। हुमायूं भी अपनी बुआ खानजादा बेगम से सलाह लिया करते थे। राजपूतों में राणा सांगा की पत्नी ने भी राजनीति में भाग लेकर अपने बेटे विक्रमादित्य के शासन को संभाला। रानी कर्मावती ने भी जब बहादुरशाह जफर ने गुजरात पर आक्रमण की धमकी दी तब हुमायूं को राखी भेज कर सहायता मांगी। अकबर भी अपनी माता व बेगमों से राजनीतिक विषयों पर सलाह लिया करते थे। नूरजहां का भी राजनीतिक प्रभाव था वह एक शक्तिशाली मुगल सम्राज्ञी थी। बेगम समरू भी शक्तिशाली रानी थी जिन्होंने उत्तर भारत के हिस्से पर शासन किया।

सामाजिक परिवर्तन होने से हिंदू समाज में नारी के स्थान में बदलाव आया उन्हें पहले जो आदर व सम्मान मिलता था उसमे दिन पर दिन गिरावट आती रही। प्रतिव्रत धर्म का पालन और घर ही उनका कार्य क्षेत्र हो गया था। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का प्रचलन हो गया जो विधवा सती नहीं होती थी उन्हें समाज में नीची दृष्टि से देखा जाता था। जो सती होती उनका गुणगान किया जाता था। बाल विवाह के कारण नारी शिक्षा के अवसर कम हो गए थे । इस समय में कुछ स्त्रियों ने शिक्षा ग्रहण कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। दुर्गावती, कर्णावती, पद्मावती प्रतिभाशाली महिलाएं थी जो समाज के लिए आदर्श बनी। शिवाजी की माता जीजाबाई ने कुशल योद्धा व प्रशासक के रूप में अपनी पहचान बनाई। अन्य कई नारियों ने गांवों, शहरों और जिलों पर शासन किया तथा धार्मिक और सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की।

ब्रिटिश काल

मध्यकाल के अंत के साथ नए युग का प्रारंभ हुआ जिसमें भारत को अंग्रेजों की गुलामी तो मिली पर साथ ही यूरोपियन पुनर्जागरण का सकारात्मक प्रभाव भी प्राप्त हुआ। नारी को समाज में सम्मान दिलवाने के लिए सामाजिक और कानूनी दोनों स्तरों पर प्रयास प्रारंभ हुए । स्वामी दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय आदि समाज सुधारको ने नारी उत्थान के लिए अतुलनीय कार्य किए।

लॉर्ड विलियम बैटिक जैसे गवर्नर जनरलों से मिलकर सती प्रथा निषेध व शारदा एक्ट बनवाए। गांधीजी के आंदोलन में भारतीय महिलाएं शामिल होने लगी। 1920 का असहयोग आंदोलन, 1930 का सविनय अवज्ञा आंदोलन, 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन आदि में महिलाओं ने सिर्फ हिस्सा ही नहीं लिया साथ बल्कि ही अंग्रेजों की यातनाएं सहन की ओर शहादते भी दी। सरोजिनी नायडू, कमला देवी, चट्टोपाध्याय, सुभद्रा कुमारी चौहान, कस्तुरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, कमला नेहरू, अरुणा आशफ अली, आदि महिलाओं की भूमिका विशेष उल्लेखनीय रही। ब्रिटिश काल में भारतीय महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वह एक मां, बहन, पत्नी के साथ–साथ निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी भी है। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में उनका भी विशेष योगदान रहा ।

आधुनिक काल

ब्रिटिश शासन में नारी की सामाजिक स्थिति में जो सुधार होने प्रारंभ हुए वे स्वतन्त्र भारत में भी आज तक जारी है। आधुनिक नारी पुरुषों से प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा कर घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारियों को बखुबी निभातें हुए आगे बढ़ती चली जा रही है। प्रशासन हो या शिक्षा, यांत्रिक हो या चिकित्सा, विज्ञान हो या

राजनीति, या अन्य कोई भी क्षेत्र हो नारी की सहभागिता सराहनीय है। कल्पना चावला को चांद पर जाने व बछेंद्री पाल को एवरेस्ट की ऊंचाई को नापने में कोई हिचकिचाहट नहीं हुई है।

साहित्य जो समाज का दर्पण कहलाता है और समाज को दिशा प्रदान करता है इस क्षेत्र में भारतीय नारी ने पुरुषों से आगे बढ़कर समाज की विसंगतियों को दर्शाकर समाज को एक नई दिशा प्रदान की है । मैत्रेयी, पुष्पा, शिवानी, नसरीन, मन्नू भंडारी, अलका सरावगी, ममता कालिन्दा जैसी अनेक लेखिकाएं समाज के ज्वलंत विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत करती हुई मन की कोमल भावनाओं को उजागर करने का कार्य कर रही है । राजनीति जो एक नीरस, शुष्क और पुरुष प्रधान क्षेत्र है इसमें भी महिला कार्यकर्ताओं और नेताओं ने विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया है। नये नये विचारो और दृष्टिकोण राजनीतिक प्रणाली में महिलाओं नेताओं के द्वारा लाए गए हैं। नारी शक्ति न्याय और सामाजिक इंसाफ के लिए आवाज बुलंद करती है, महिलाओं के अधिकारों की रक्षा और महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए संघर्ष करती है। पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने समय में प्रभावशाली नेताओं के सामने अपनी योग्यता व सूझबूझ से सम्मानजनक मुकाम हासिल किया। निर्मला सीतारमण भारतीय जनता पार्टी की प्रवक्ता के साथ वाणिज्य और उद्योग (स्वतंत्र प्रभार) बखूबी संभाला वित्त व कॉरपोरेट मामलों की राज्य मंत्री रही। 2017 में उन्हें रक्षा मंत्री बनाया गया और फिर वह वितमंत्री बनी इस मुकाम पर पहुंचने के लिए बड़े–बड़े राजनीतिज्ञों को काफी समय लगता है। निर्मला सीतारमण ने अपनी जिम्मेदारियों को चाहे वह रक्षा विभाग की हो या वित्त विभाग की बेहतर तरीके से निभाया है और भारत के विकास के लिए अपना योगदान दे रही है। श्रीमती प्रतिभा पाटिल भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति और श्री द्रोपदी मुर्मू वर्तमान समय में राष्ट्रपति पद पर कार्यरत है। जयललिता, स्मृति जुबिन ईरानी, मायावती, वसुंधरा राजे सिंधिया, सिद्धि कुमारी, दिया कुमारी, सोनिया गांधी का मेंनका गांधी आदि राजनीति में विभिन्न पदों पर कार्य करके समाज को संचालित कर रही है। सौंदर्य और फिल्म जगत के क्षेत्र में भी भारतीय नारियों ने अपनी स्थिति को मजबूत किया है। ऐश्वर्या राय, सुष्मिता सेन, लारा दत्ता, रीता फारिया, दिया मिर्जा, व प्रियंका चोपड़ा ने विश्व सुंदरी बनकर अपने सौंदर्य व प्रतिभा का लोहा पूरे विश्व में मनवाया है। इस प्रतियोगिता में सौंदर्य के साथ–साथ बुद्धिमत्ता व व्यापक दृष्टिकोण की भी आवश्यकता होती है।

वर्तमान समय की भारतीय नारी ने यह संभव करके दिखाया है। आशा भोसले लता मंगेशकर की गायकी ने पूरे भारत में सम्मान प्राप्त किया। आधुनिक नारी ने शिक्षा प्राप्त करके अपने लिए नए–नए मार्ग बनाए हैं और समाज के विभिन्न पक्षों में समायोजन भी स्थापित किया ळें न्याय, राजनीति, विधि, चिकित्सा, तकनीकी क्षेत्रों में कार्य भी कर रही है और इनमें शिक्षण कार्य भी कर रही है। वर्तमान नारी अपनी समस्याओं से ना तो दुखी होती ना ही समस्याओं का रोना रोती बल्कि अपनी समस्याओं का समाधान कर समाज को प्रेरित करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करके समाज सेवा का कार्य भी करती है। श्रीमती किरण बेदी प्रथम भारतीय पुलिस अधिकारी ने सकारात्मक व साहसिक कार्य करके भारत ही नही पूरे विश्व को प्रभावित किया है।

महिलाओं नें खेलकूद के क्षेत्र में भी अपना नाम स्पर्ण अक्षरो में लिखवाया है। एथलीट पी टी उषा जो उडनपरी के नाम से जानी जाती है। भारोतोलक मल्लुकेश्वरी, क्रिकेटर झुल्लन गोस्वामी, बास्केटबॉल प्रतिभा सिंह, बैडमिंटन में अपूर्ण पोपट, पी सिंधु, साइना नेहवाल, बोक्सर मैरी कॉम, पर्वतारोहण में बछेन्द्र पाल, निशानेबाजी में अंजलि वेदपाठक आदि ने वैश्विक स्तर पर अपना प्रदर्शन कर देश का गौरव बढ़ाया है। सुनीता विलियम्स, कल्पना चावला, स्वाति मोहन, नंदनी हरिनाथ, कल्पना कालाहस्ती आदि महिलाओं ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में अपना परचम लहराया है। फातिमा बीबी, इंदु मल्होत्रा, हिमा कोहली, इंदिरा बनर्जी, आर भानूमति, रंजना प्रकाश देसाई, ज्ञान सुधा मिश्रा, सभा पाल, सुजाता मनोहर आदि ने वकील हाईकोर्ट जज व सुप्रीम कोर्ट के जज के रूप में कार्य करके न्याय के क्षेत्र में अपना योगदान दिया है।

जहां गरीब महिलाएं अखबार बेचकर, टोकरिया बनाकर जंगल में लकडियां काटकर लाना, कृषि कार्य व घरो मे जाकर घरेलू कार्य, मेहनत – मजदूरी करके अपने घर परिवार की आर्थिक सहायता करती है । वहीं इंदिरा नूयी, किरण मजूमदार, वंदना लूथरा, राधिका अग्रवाल, वाणी मोल, सावित्री जिंदल, रीना तिवारी, दिव्या गोकलनाथ आदि महिलाओं ने उद्यम के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

प्राचीन काल से भारतीय नारी ने जो संघर्ष करना प्रारंभ किया वह वर्तमान समय तक भी समाप्त नहीं हुआ है। आज भी उन्हें अपने अधिकारों व मान सम्मान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। अधिकतर महिलाओं को पैतृक संपत्ति में हिस्सा नहीं मिलता और जो पैतृक संपत्ति में हिस्सा ले लेती है उनमें से अधिकांश के पीहर पक्ष वाले उनसे अपना रिश्ता ही समाप्त कर देते हैं। अधिकतर परिवारों में आज भी महिलाओं के नाम पर कोई संपत्ति नहीं होती महिलाओं के विरुद्ध अपराधों से पुलिस रिकॉर्ड भरे हुए है। महिला अपराधों में आधे से ज्यादा कामकाजी महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर छेड़छाड़ व उत्पीड़न से संबंधित होते हैं। जिनसे नारी अपनी अस्मिता व मान सम्मान की सुरक्षा करवाना चाहती है अधिकतर महिलाएं उनसे ही बलात्कार का शिकार होती है। दहेज प्रथा के विरुद्ध सरकार द्वारा दहेज निषेध कानून भी बनाए गए हैं । फिर भी लगभग 5000 महिलाओं की मौत दहेज के कारण हो जाती है। एक दर्जन से ज्यादा महिलाएं प्रत्येक दिन जानबूझकर लगाई गई रसोई घर की आग से जलकर मार दी जाती है । बाल विवाह को 1860 में गैर कानूनी घोषित कर दिया गया था । परंतु फिर भी भारत में वर्तमान समय में भी बाल विवाह करवाए जाते हैं। मध्यकाल से ही कन्या के जन्म पर परिवार वाले खुश नहीं होते थे। कन्याओं को जन्म देने वाली मां को परिवार में ज्यादतियों का सामना करना पड़ता था लड़के का जन्म होने पर जश्न मनाया जाता था । यह परंपरा भारत में आज भी जारी है। जन्म से पहले ही भ्रुण परीक्षण करवाया जाता जिसमे अगर यह पता चला कि भ्रुण कन्या है तो उसे जन्म से पहले ही मार दिया जाता था अथवा गर्भपात करवा दिया जाता । बाद में भूर्ण परीक्षण करने वाले सभी चिकित्सकीय परिक्षणो पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। ग्रमीण भारत में आज भी कन्या शिशु हत्या प्रचलित है । घरेलू हिंसा कानून सरकार द्वारा बनाया गया है फिर भी महिलाएं परिवार में प्रताड़ित की जाती है आज भी नारी घरेलू हिंसा का शिकार होती है ।

समाज सुधार आन्दोलो व नारी शिक्षा से समाज में जागरुकता आयी है। पुरुष प्रधान समाज की सोच में भी परिवर्तन आया। आधुनिक नारी नौकरी करके धन कमाने लगी है और अपने परिवार की आर्थिक सहायता कर रही है सविधान द्वारा स्त्री व पुरुष को समान मौलिक अधिकार प्रदान किये गये है इससे भी महिलाओ की स्थिती सुदृढ हुई है उन्हें अपने व्यक्तित्व विकास के अवसर मिलने लगे है अपने आत्मविश्वास, मेहनत, अनुभव व कार्यकुशलता से नये–नये रास्तो का निर्माण कर रही है। वर्ष 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रुप मे मनाया गया सरकार द्वारा महिलाओ की स्थिती मे सुधार व उन्हें जागरुक बनाने के लिए प्रयास किये जा रहे है।

निष्कर्ष

भारतीय नारी कि स्थिती प्राचीन काल से आधुनिक काल तक सदैव समान नही रही है। प्राचीन काल में नारी का उच्च स्थान था उसे अनेक अधिकार प्राप्त थें समय के साथ उसके पास कोई अधिकार नही रहें उनकी शिक्षा व स्वतन्त्रता पर प्रतिबद्व लग गए। 19वी सदी से महिलाओ की स्थिति में सुधार होने शुरु हुए समाज सुधारको द्वारा बाल विवाह, प्रदाप्रथा, बहुविवाह जैसी कुप्रथाओं को समाज से दूर करने का प्रयास किया गया। 21वी सदी तक आते –आते महिलाओ की स्थिति में अतीत से बेहतर हुई धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, खेलकूद, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में महिलाओ ने उपलब्धिया हासिल की। आज की नारी आत्मनिर्भर व आत्मविश्वासी बनकर पुरुषो के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज के विकास में अपना योगदान दे रही है।

शोध ग्रन्थ

1. शरण, डी के, भारतीय इतिहास में नारी, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
2. शेण्डे, डा हरिदास रामजी, सुदर्शन, नारी सशक्तिकरण, ग्रन्थ विकास जयपूर
3. व्होरा आशा रानी, प्राचीन काल से मध्यकाल तक
4. श्रीवास्तव, के सी प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति
5. वर्मा, डॉक्टर ओ पी, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, विकास प्रकाशन
6. डॉक्टर राजेंद्र पांडे, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उत्तर प्रदेश, हिंदी संस्थान लखनऊ, द्वितीय संस्करण 1983
7. थापर रोमिला, भारत का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1993
8. शर्मा रामचरण, सोशल चेंजिंज इन अर्ली मेडविल इंडिया नई दिल्ली
9. प्रोफेसर वाई रमेश, भारतीय संस्कृति हंसा प्रकाशन जयपुर 2007
10. डॉक्टर किरण टंडन, भारतीय संस्कृति ईर्स्टन बुक लिंकर दिल्ली 2007
11. मनुस्मृति 355
12. राम अहुजा, भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत प्रकाशन नई दिल्ली
13. राजकुमार डा, नारी के बदले आयाम, अर्जन पब्लिशिंग हाउस
14. व्यास, जय प्रकाश, नारी शोषण, सुनन्दा प्रकाशन
15. अल्टेकर, ए एस, द पोजीशन आफ विमेन इन हिन्दू सिविलाईजेशन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।